श्री सूर्य चालीसा

॥ दोहा ॥

कनक बदन कुण्डल मकर, मुक्ता माला अङ्ग,
पद्मासन स्थित ध्याइए, शंख चक्र के सङ्ग॥

॥ चौपाई ॥

जय सविता जय जयति दिवाकर! । 1 सहस्त्रांशु! सप्ताश्व तिमिरहर॥ भानु! पतंग! मरीची! भास्कर! । सविता हंस! सुनूर विभाकर॥	विवस्वान! आदित्य! विकर्तन । 2 मार्तण्ड हरिरूप विरोचन ॥ अम्बरमणि! खग! रवि कहलाते । वेद हिरण्यगर्भ कह गाते ॥	सहस्त्रांशु प्रद्योतन, कहिकहि । 3 मुनिगन होत प्रसन्न मोदलहि ॥ अरुण सदृश सारथी मनोहर । हांकत हय साता चढ़ि रथ पर ॥
मंडल की महिमा अति न्यारी । 4 तेज रूप केरी बलिहारी ॥ उच्चैःश्रवा सदृश हय जोते । देखि पुरन्दर लज्जित होते॥	मित्र मरीचि भानु अरुण भास्कर । 5 सविता सूर्य अर्क खग कलिकर ॥ पूषा रवि आदित्य नाम लै । हिरण्यगर्भाय नमः कहिकै॥	द्वादस नाम प्रेम सों गावैं । 6 मस्तक बारह बार नवावैं ॥ चार पदारथ जन सो पावै । दुःख दारिद्र अघ पुंज नसावै ॥
नमस्कार को चमत्कार यह । 7 विधि हरिहर को कृपासार यह ॥ सेवै भानु तुमहिं मन लाई । अष्टसिद्धि नवनिधि तेहिं पाई ॥	बारह नाम उच्चारन करते । 8 सहस जनम के पातक टरते ॥ उपाख्यान जो करते तवजन । रिपु सों जमलहते सोतेहि छन ॥	धन सुत जुत परिवार बढ़तु है । 9 प्रबल मोह को फंद कटतु है ॥ अर्क शीश को रक्षा करते । रवि ललाट पर नित्य बिहरते ॥
सूर्य नेत्र पर नित्य विराजत । 10 कर्ण देस पर दिनकर छाजत ॥ भानु नासिका वासकरहुनित । भास्कर करत सदा मुखको हित ॥	ओंठ रहैं पर्जन्य हमारे । 11 रसना बीच तीक्ष्ण बस प्यारे ॥ कंठ सुवर्ण रेत की शोभा । तिग्म तेजसः कांधे लोभा ॥	पूषां बाहू मित्र पीठहिं पर । 12 त्वष्टा वरुण रहत सुउष्णकर ॥ युगल हाथ पर रक्षा कारन । भानुमान उरसर्म सुउदरचन ॥
बसत नाभि आदित्य मनोहर । 13 कटिमंह, रहत मन मुदभर ॥ जंघा गोपति सविता बासा । गुप्त दिवाकर करत हुलासा॥	विवस्वान पद की रखवारी । 14 बाहर बसते नित तम हारी ॥ सहस्त्रांशु सर्वांग सम्हारै । रक्षा कवच विचित्र विचारे ॥	अस जोजन अपने मन माहीं । 15 भय जगबीच करहुं तेहि नाहीं ॥ दद्रु कुष्ठ तेहिं कबहु न व्यापै । जोजन याको मन मंह जापै ॥
अंधकार जग का जो हरता । 16 नव प्रकाश से आनन्द भरता ॥ ग्रह गन ग्रसि न मिटावत जाही । कोटि बार मैं प्रनवौं ताही॥	मंद सदृश सुत जग में जाके । 17 धर्मराज सम अद्भुत बांके ॥ धन्य-धन्य तुम दिनमनि देवा । किया करत सुरमुनि नर सेवा॥	भक्ति भावयुत पूर्ण नियम सों । 18 दूर हटतसो भवके भ्रम सों ॥ परम धन्य सों नर तनधारी । हैं प्रसन्न जेहि पर तम हारी॥
अरुण माघ महं सूर्य फाल्गुन । 19 मधु वेदांग नाम रवि उदयन ॥ भानु उदय बैसाख गिनावै । ज्येष्ठ इन्द्र आषाढ़ रवि गावै ॥	यम भादों आश्विन हिमरेता । 20 कातिक होत दिवाकर नेता ॥ अगहन भिन्न विष्णु हैं पूसहिं । पुरुष नाम रविहैं मलमासहिं ॥	

॥ दोहा ॥

भानु चालीसा प्रेम युत, गावहिं जे नर नित्य,
सुख सम्पत्ति लहि बिबिध, होंहिं सदा कृतकृत्य॥

Source: https://www.hindugallery.com/